राष्ट्र एवं धर्मरक्षाके उपाय

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्'का सम्मान करें !

१. 'वन्दे मातरम्' एवं संवेदनाशून्य नागरिक ! – आ. योगेश शास्त्री, बंगाल ९

२. 'वन्दे मातरम्' न कहनेवाले 'देशद्रोही' ! – कर्नल दर्शनकुमार कपूर, देहली १०

अध्याय २ : कश्मीरकी समस्या

१. कश्मीर : राज्यकर्ताओंका अपयश ! – अश्वनीकुमार च्रोंगू, पनून कश्मीर ११

२. कश्मीर समस्याकी भीषणता ! – डॉ. सच्चिदानंद शेवडे, प्रवचनकार, मुंबई १२

अध्याय ३ : बांग्लादेशकी घुसपैठकी समस्या

१. भारतमें बांग्लादेशी घुसपैठिए ! – श्री. सूर्यकांत केळकर, मध्यप्रदेश १७

२. बांग्लादेशी घुसपैठिए एवं माओवादी ! – श्री. उपानंद ब्रह्मचारी, बंगाल २२

अध्याय ४ : मुसलमानोंका हिंदूविरोधी इतिहास एवं कृत्य

१. मुसलमानोंके प्रति प्रतिष्ठितोंके विचार ! – श्री. विद्याधर नारगोलकर, पुणे २६

२. 'श्रीराम चैनल'को पुलिस एवं मुसलमान सांसदका विरोध ! २८

३. धर्मांध मुसलमानोंके आक्रमणोंका प्रतिकार करने हेतु हिंदुओंका संगठन !
– श्री. राजा सिंह ठाकुर, अध्यक्ष, श्रीराम युवा सेना, भाग्यनगर, आंध्रप्रदेश. २९

अध्याय ५ : हिंदूविरोधी दंगे और हिंदूविरोधी दंगेविरोधी कानून !

१. दंगे और हिंदुओंका संपर्कतंत्र ! – श्री. तपन घोष, हिंदू संहति, बंगाल. ३१

२. सांप्रदायिक हिंसा कानून, सच्चर आयोग एवं कथित भगवा
आतंकवाद ! – अधिवक्ता संजीव पुनाळेकर, उच्च न्यायालय, मुंबई. ४४

३. 'सांप्रदायिक अधिनियम'के संकट ! – श्री. मनीष मंजुल, 'समर्थ', देहली. ५३

अध्याय ६ : धर्मजागृति

१. हिंदुओ, अपने धर्मका महत्त्व समझो ! – आ. योगेश शास्त्री, बंगाल ५६

२. भारतीय हिंदुओंकी दुर्दशा ! – श्री. पी.पी. एम्. नायर, मुंबई ५८

३. धर्मजागृतिके माध्यमसे हिंदूसंगठन ! – श्री. नवलकिशोर शर्मा, मध्यप्रदेश ५९

भूमिका

'हिंदू जनजागृति समिति'की ओरसे रामनाथी, गोवामें १० से १४ जून २०१२ की कालावधिमें प्रथम 'अखिल भारतीय हिंदू अधिवेशन' संपन्न हुआ । यह अधिवेशन 'हिंदू राष्ट्रकी स्थापना' हेतु बढा प्रथम ऐतिहासिक पग था । इस अधिवेशनमें १७ राज्योंके प्रखर हिंदुत्वनिष्ठ संगठनोंके नेता, हिंदुत्वनिष्ठ पत्रिकाओंके संपादक, विचारक, अधिवक्ता तथा हिंदुत्वका समष्टि कार्य करनेवाले संत सहभागी हुए थे । इस अधिवेशनके निमित्त पूरे देशके हिंदुत्वनिष्ठोंका एकत्र होना, यह एक विलक्षण घटना ही कही जाएगी । इस अधिवेशनमें निरंतर पांच दिनोंतक विविध हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंने विविध राष्ट्रीय एवं धार्मिक समस्याओंका अभ्यासपूर्ण विवेचन किया । इस अवसरपर उपस्थित हिंदुत्वनिष्ठोंने विविध क्षेत्रोंमें किए हुए कार्य और प्राप्त अनुभवोंका कथन किया । इस अधिवेशनमें धर्मरक्षाके अभियानोंके संदर्भमें 'साझा कार्यक्रम' चलानेका निर्णय हिंदू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए आवश्यक धर्मक्रांतिके लिए पूरक सिद्ध हुआ ! इस ऐतिहासिक अधिवेशनमें प्रस्तुत हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके विचार हम तीन ग्रंथमालाके रूपमें प्रस्तुत कर रहे हैं । इस ग्रंथमाला के दूसरे भागमें गणमान्य हिंदुत्वनिष्ठोंद्वारा व्यक्त, कश्मीर प्रश्न, बांग्लादेशी घुसपैठ, इतिहासकालसे चला आ रहा मुसलमानोंका हिंदूद्वेष, धार्मिक दंगोंके संदर्भमें हिंदुओंपर अन्याय करनेवाले अधिनियम, इन विषयोंसे संबंधित विचारों का समावेश है । इस ग्रंथमालामें दिए हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके भाषण संपादित स्वरूपमें हैं तथा हिंदुत्वके क्षेत्रमें कार्य करनेवाले प्रत्येकके लिए प्रेरणादायी होनेके साथ ही जन्महिंदुओंको कर्महिंदू बननेके लिए भी मार्गदर्शक हैं ।

'इस ग्रंथमें प्रस्तुत हिंदुत्वनिष्ठ मान्यवरोंके भाषण पढकर राष्ट्र एवं धर्मके रक्षण हेतु हिंदू क्रियाशील बनें तथा 'हिंदू राष्ट्र-स्थापनाके ऐतिहासिक कार्यमें योगदान दें', यही ईश्वरके चरणोंमें प्रार्थना है !